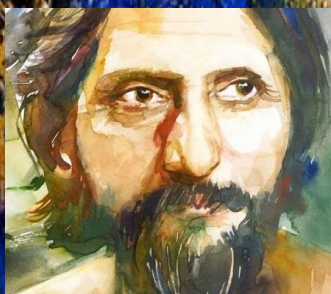




कमला नेहरू महिला महाविद्यालय  
हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका



छायावाद



हिंदी  
भारती

फरवरी - 2018





# संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा

कु. शुभश्री शताब्दी दास





## संपादकीय

“हिंदी भारती” का फरवरी अंक “छायावाद” के नाम समर्पित है। सन् 1918 से 1938 तक का समय हिंदी साहित्य के इतिहास में “छायावाद” के नाम से जाना जाता है। इस युग में विपुल साहित्य का सृजन हुआ। युगीन भारतीय जीवन की सारी विविधतायें अपनी समग्रता के साथ इस युग में स्थान पाती हैं। “हिंदी भारती” के इस अंक में विभाग की छात्राओं ने “छायावाद” को अपनी दृष्टि से देखने, समझने एवं अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। हिंदी विभाग का यह प्रयास है कि ई - पत्रिका के माध्यम से छात्राओं में हिंदी लेखन एवं पठन में रुची हो, साथ ही हिंदी एवं हिंदी साहित्य की समृद्धशाली परम्परा से परिचय हो। अतः कोशिश की जाती है कि सृजन के साथ - साथ भाषा एवं साहित्य से सम्बंधित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी छात्राओं तथा पाठकों तक समय - समय पर पहुँचती रहे। इस मासिक पत्रिका का छठा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है आपका आदर और स्नेह इसी तरह मिलता रहेगा।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा





## छायावाद : परिचय

'छायावाद' शब्द के अर्थ को लेकर आलोचना-जगत में काफ़ी विवाद रहा है। इसका कारण यह है कि जहां यथार्थवाद, आदर्शवाद, प्रगतिवाद आदि ऐसे नाम हैं, जिनके आधार पर इन वादों के अंतर्गत स्वीकृत रचनाओं के बुनियादी स्वरूप को आसानी से समझा जा सकता है, वहीं 'छायावाद' शब्द किसी ऐसे स्पष्ट अर्थ का बोध नहीं कराता, जिसके आधार पर छायावादी काव्य की विशेषताओं को समझा जा सके। हो सकता है कि आरंभ में 'छाया' से अस्पष्टता की व्यंजना अभिप्रेत रही हो, किन्तु यह अर्थ छायावादी काव्य के स्वरूप को समझाने में सर्वथा असमर्थ है। इसलिए 'छायावाद' के अर्थ को समझने के लिए हमें उन प्रवृत्तियों को जानने का प्रयास करना होगा, जो छायावादी काव्य में पायी जाती हैं। जहां यथार्थवाद, प्रगतिवाद आदि काव्यधराओं के विवेचन में यथार्थ, प्रगति आदि के अर्थ से सहायता ली जाती है, वहीं छायावाद के अर्थ को समझने के लिए विपरीत दिशा में चलना होगा - नामवाचक शब्द के अर्थ से काव्यगत विशेषताओं की ओर जाने की स्थान पर काव्य की विशेषताओं से नामवाचक शब्द के अर्थ निर्धारण का प्रयास करना होगा। लेकिन 'छायावाद' के जो अर्थ आरंभ में निर्धारित किये गए, उनमें 'छाया' शब्द के अर्थ समझाने की ही कोशिश की गई। उदाहरणार्थ, आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसका संबंध अंग्रेजी के शब्द 'फैंटेमैएस्टा' से जोड़ने का प्रयास किया, तो प्रसाद जी ने इसे 'विच्छति' या 'मोती की सी-तरलता' से संबंध किया। लेकिन आज इन मान्यताओं का केवल ऐतिहासिक महत्व है।

'छायावाद' के अर्थ - निर्धारण के संदर्भ में एक और विवाद भी सामने आया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे सीमित अर्थ में एक शैली विशेष माना, जिसमें लाक्षणिक मूर्तिमत्ता, प्रतीक-विधान, विरोध-चमत्कार, विशेषण-विपर्यय, मानवीकरण, अन्योक्ति-विधान आदि पर बल रहता है।

'छायावाद' व्यापक अर्थ में उन्होंने रहस्यवाद को भी समाविष्ट किया है। इधर प्रसाद जी ने छायावाद में स्वानुभूति की विवृति पर बल दिया। लेकिन आज छायावाद और रहस्यवाद दो स्वतंत्रवाद माने जाते हैं। 'छायावाद' शैलीगत विशेषताओं के साथ-साथ प्रेम, सौंदर्य आदि भावनाओं को भी स्वीकार किया जाता है, जबकि अव्यक्त निराकार प्रिय के प्रति प्रणय-निवेदन को रहस्यवाद की मूल विशेषता माना जाता है। यद्यपि प्रसाद ने रहस्यवाद को आध्यात्मवाद और विशेषतः शैव दर्शन के साथ संबंध करने का प्रयास किया, किन्तु उनकी वह व्याख्या सर्वमान्य न हो सकी। जहाँ तक भाषा-शैली का प्रश्न है, छायावाद और रहस्यवाद में समानता पायी जाती है। किंतु, विषयवस्तु की दृष्टि से दोनों में स्पष्ट अंतर है। रहस्यवादी भावना का आलंबन जहां अमूर्त निराकार ब्रह्म है, जो सर्वव्यापक है, वहां छायावाद का विषय लौकिक ही होता है।

छायावाद के विवेचन के प्रसंग में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति का भी उल्लेख मिलता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने श्रीधर पाठक को आधुनिक काव्यधारा में 'सच्चे स्वच्छंदतावाद के प्रवर्तक' के रूप में स्वीकार किया है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि शुक्ल जी ने स्वच्छंदतावाद का उल्लेख करते हुए 'पद्य के ढांचे, अभिव्यंजना के ढंग, प्रकृति के स्वरूप-निरीक्षण' आदि की बात की है। ये विशेषताएँ परवर्ती छायावादी काव्य में सामने आयीं। वैसे छायावादी काव्य का एक प्रधान लक्ष्य है - स्वानुभूति की प्रत्यक्ष विवृति, जो व्यक्तिगत प्रणय से ले कर करुणा और आनंद तक फैली हुई है।



स्तुति प्रज्ञा दास, +3 प्रथम वर्ष



## छायावाद युगीन राष्ट्रप्रेम की कविताएँ

छायावाद युग भारतीय जीवन के लिए विषम संघर्ष का समय था। अंग्रेजों से पहले जितने भी विदेशी आक्रमणकारी यहां आये थे, वे लोग लूटमार करके वापस चले जाते थे, या यहीं रह जाते थे। पर इस देश में रहते हुए किसी दूसरे देश की बात नहीं सोचते थे। पर अंग्रेज इसके विपरीत थे। उनका उद्देश्य था भारत का शोषण करके अपने देश की श्रीवृद्धि करना। इसलिए भारत की जनता में उनके प्रति आक्रोश था, और इस आक्रोश ने धीरे-धीरे बढ़कर स्वाधीनता-संग्राम का रूप ले लिया। इस संग्राम का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया और यह संग्राम अहिंसा और सत्य पर आधारित असहयोग के रूप में सामने आया।

इस युग में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध करने के लिये असहयोग आंदोलन को अपनाया गया। इस युग के राष्ट्रीय - सांस्कृतिक काव्य में दो भवनाएँ पूरी शक्ति के साथ व्यक्त हुईं, एक तो कवियों ने भारत की आंतरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए देश के लोगों को आह्वान किया, और दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता-संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी। इस युग के कुछ कवियों ने न सिर्फ संग्रामियों को प्रेरणा दी, बल्कि स्वयं भी देश की आजादी को लड़ाई में अपने आप को उत्सर्ग कर दिया। उनमें से माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा और शुभद्राकुमारी चौहान प्रमुख थे।

यह संग्राम सत्य और अहिंसा से परिचालित हो रहा था। इस युग के शोषित भारतीय जनता को विज्ञान से प्राप्त नये साधनों से युक्त ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ संघर्ष करना बहुत मुश्किल हो गया था। इसीलिए उनके जागरण और संघर्ष के भावों का संचार करने के लिए कवियों ने जनता को मुख्य रूप से यह बताया कि प्रत्येक व्यक्ति असीम अक्षय शक्ति का स्रोत है, आवश्यकता इस बात की है कि वह इसे पहचाने और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए तैयार हो जाये और यह आत्मविश्वास अपने अतीत की गरिमा से मिलती है, जिसके कारण वह युगानुरूप अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं का संशोधन परिवर्धन करती रही। बालकृष्ण शर्मा ने इस

संग्राम में भारतवासियों को जगाने के लिये उनको 'चिरदोहित' और 'भिखमंगे' बोल कर पुकारा है, वे कहते हैं:-

“ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिरदोहित,  
तू अखंड भंडार शक्ति का, जाग अरे निद्रा सम्मोहित!  
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल थल भर दे  
अंगारों के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे ।”

छायावादी कवियों ने राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन, हरिश्चंद्र आदि प्राचीन युगपुरुषों के चरित्रों के उदाहरण देकर जनता में विश्वास और आस्था पैदा करने का प्रयत्न किया। 'निराला' जी के 'दिल्ली' कविता में देश के अतीत गौरव के साथ वर्तमान के दुर्दशा का चित्रण कर एक गंभीर प्रभाव की अभिव्यक्ति की है। वह है:-

“क्या यह वह देश है  
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र  
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रम्हचर्य - दीप्त  
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमंडल में  
उज्ज्वल अधीर और चिर नवीन  
श्रीमुख से कृष्ण के सुना था जहाँ भारत ने  
गीता गीत-सिंहनाद  
मर्मवाणी जीवन-संग्राम की  
सार्थक समन्वय ज्ञान-कर्म-भक्ति-योग का?”

इसप्रकार इन कवियों ने वर्तमान को अतीत से बांध कर उत्साह और महानता का उधबोध करने का प्रयास किया। इस संदर्भ में कवियों का ध्यान उन्हीं कर्म, ज्ञान, निष्ठा, सत्य, साधना, सहिष्णुता आदि मूल्यों की ओर गया जो समकालीन जीवन के लिए भी आदर्श बन सकते हैं। इस प्रकार यह जीवंत अतीत की खोज का प्रयास था जिसमें साधकों, चिंतकों और कवियों ने मिल कर योग दिया।

इस युग के सबसे बड़ी आवश्यकता यह थी कि व्यक्ति दीन-दुखियों की सेवा करे, उनके कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करे, ईश्वर दीन-दुःखियों के हृदय में निवास करते हैं,

इसीलिए जो ईश्वर-भक्ति करना चाहते हैं, उसका प्रधान कर्तव्य यह है कि वह दलित और शोषित वर्ग के उद्धार के लिए संघर्ष करें। रामनरेश त्रिपाठी ने इस सत्य का बड़ी मार्मिकता के साथ प्रतिपादन किया अपनी इन पंक्तियां में:-

“मेरे लिए खड़ा था दुःखियों के द्वार पर तू  
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।  
बन कर किसी के आंसू मेरे लिए बहा तू  
मैं देखता तुझे था माशूक के बदन में।”

आलोच्य युग में कई रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप में देश की स्वाधीनता की मांग का समर्थन किया गया है। अपने देश के वर्तमान और भविष्य को बनाने के अधिकार को रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी कविता में व्यक्त किया:-

“करेंगे क्या ले कर अपवर्ग, हमारा भारत ही सुख स्वर्ग।  
नहीं है किसी लक्ष्य पर ध्यान, चाहिए केवल स्वत्व समान ॥  
इसे तज कर क्या तरु निर्मूल, करेंगे ले कर किंशुक फूल।  
प्रकृत पुरुषों का जीवन-मूल, चाहिए केवल घर का रूल॥”

इस स्वाधीनता आंदोलन में दो महत्वपूर्ण मूल्यों थे- एक, असहयोग और दूसरा आत्मबलिदान। जिसके प्रभावस्वरूप इस धारा के रचनाओं में जनता को सरकार को असहयोग करने के लिए प्रेरित किया गया और असहयोग के साथ साथ सहिष्णुता पर भी विशेष बल दिया गया। यदि यह शांतिपूर्ण आंदोलन जीवन की बलि मांगता है, तो उसके लिए भी जनता को तैयार रहना चाहिए। सुभद्राकुमारी चौहान ने असहयोग और बलिदान देते हुए कहा:-

“विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र, पाप से असहयोग ले ठान।  
गुंजा डाले स्वराज की तान, और सब हो जावें बलिदान।”

कहीं-कहीं क्रांति का स्वर भी सुनायी देता था। ‘नवीन’ जी की रचना ‘कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं जिससे उथल पुथल मच जाये’ एक ऐसी ही ध्वंस रचना है। निराला ने ‘आवाहन’ कविता में ध्वंस की बात कहते हुआ कहा:-



“एक बार बस और नाच तू श्यामा!  
सामान सभी तैयार हैं,  
कितनी ही असुर,  
चाहिए कितनी तुझको हार?  
एक बार बस और नाच तू श्यामा!”

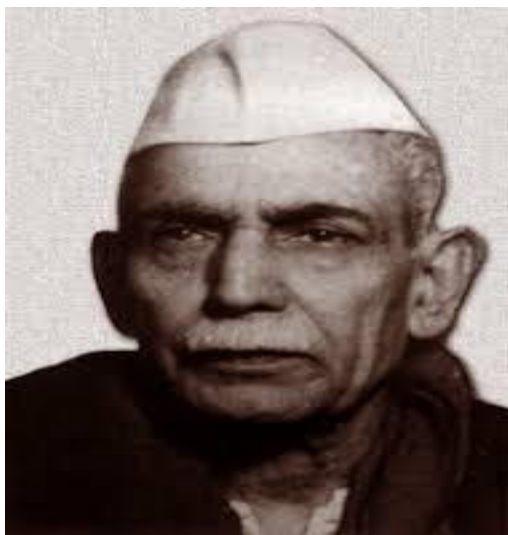
इस प्रकार की रचनाओं के द्वारा कवियों ने जनता में देश के प्रति प्रेम और भक्ति की भवनाएँ उत्पन्न करने का प्रयास किया है। जिस देश ने हमें जीवन दिया, जिस की धूल में पल कर बड़े हुए उसकी स्वतंत्रता के संघर्ष-काल में प्रत्येक भारतवासी का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि-देश की स्वाधीनता के लिए साधना करें। इस युग के सभी कवियों ने देश के प्रति अतीत गौरव की अटूट श्रद्धा, और साथ ही दृढ़ विश्वास की ओर प्रेरित किया है। और कहा है कि शीघ्र ही देश पराधीनता और अत्याचार के दमनचक्र से मुक्त होगा और फिर से एक नयी, विराट और भव्य सामाजिक व्यवस्था का उदय होगा।



श्रद्धांजलि भटल, सस्मिता महान्ति, लिज़ालिन परिडा, +3 प्रथम वर्ष



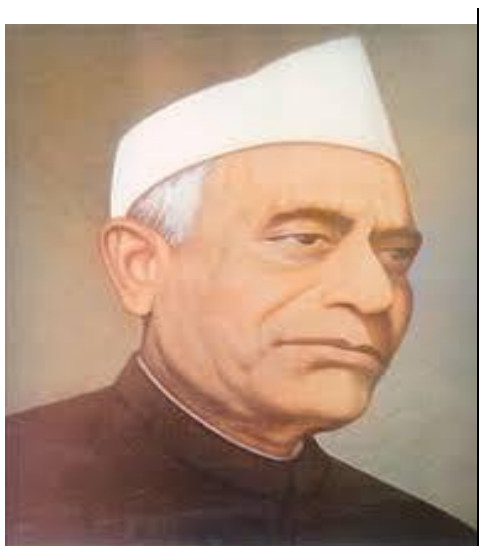
## छायावाद युगीन राष्ट्रप्रेम के कवि



माखनलाल चतुर्वेदी



बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'



रामनरेश त्रिपाठी



सुभद्राकुमारी चौहान



## छायावादी काव्य

छायावाद का आरंभ सन् 1918 में और अंत 1938 में माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक कविता के तृतीय उत्थान की सीमा का आरंभ 1975 (सन् 1918) से माना है। सन् 1918 को ही छायावाद की आरंभिक सीमा मानने का कारण यह है कि छायावादी पद्धति की रचनाएं इसके आसपास प्रकाशित होने लगी थी। निराला की 'जूही की कली' (1916) के अतिरिक्त पंत की पल्लव की कुछ कविताओं की रचना भी 1920 ई के आसपास हो चुकी थी। सन् 1935 में छायावादी काव्य-चेतना को मूर्तिमान करने वाली कृति 'कामायनी' का प्रकाशन हुआ। छायावाद को अगर हमें और भी गहराई से जानना है तो हम को प्रवृत्तियों को जानने का प्रयास करना होगा जो छायावादी काव्य में पाई जाती है। जहां यथार्थवाद, प्रगतिवाद, आदि कव्यधाराओं के विवेचन में यथार्थ, प्रगति आदि के अर्थ से सहायता ली जाती है। छायावाद के अर्थ समझने के लिए विपरीत दिशा में चलना होगा- नामवाचक शब्द के अर्थ से काव्यधारा की विशेषताओं की ओर जाने के स्थान पर काव्य की विशेषताओं से नामवाचक शब्द के अर्थ निर्धारण का प्रयास करना होगा। उदारणार्थ-स्वरूप आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसका संबंध अंग्रेजी के शब्द "फैंटेमेस्टा" से जोड़ने का प्रयास किया तो प्रसाद जी ने इसे 'विच्छति' या मोती की सी तरलता से संबंध किया।

**रहस्यवाद** - छायावाद के व्यापक अर्थ में रामचंद्र शुक्ल ने रहस्यवाद को भी समाविष्ट किया है। इधर प्रसाद जी ने छायावाद में स्वानुभूति की विवृति पर बल दिया। लेकिन आज छायावाद और रहस्यवाद दो स्वतंत्रवाद माने जाते हैं। छायावाद में शैलीगत विशेषताओं के साथ-साथ प्रेम ,



सौंदर्य आदि भावनाओं को भी स्वीकार किया जाता है, जबकि अव्यक्त निराकार प्रिय के प्रति प्रणय-निवेदन को रहस्यवाद की मूल विशेषता माना जाता है। जहां तक भाषा-शैली का प्रश्न है, छायावाद और रहस्यवाद में समानता पायी जाती है। किंतु विषयवस्तु की दृष्टि से दोनों में स्पष्ट अंतर है। रहस्यवादी भावना का आलंबन जहां अमूर्त निराकार ब्रम्ह है, जो सर्वव्यापक है, वहाँ छायावादी का विषय लौकिक ही होता है ।

**स्वच्छन्दतावाद** - छायावाद के विवेचन के प्रसंग में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति का भी उल्लेख मिलता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने श्रीधर पाठक को आधुनिक काव्यधारा में सच्चे स्वच्छन्दतावाद के प्रवर्तक के रूप में स्वीकार किया है। इस प्रकार की स्वच्छन्दता का आभास पहले पं श्रीधर पाठक ने ही दिया, उन्होंने प्रकृति के रुढिबद्ध रूपों तक ही सीमित न रह कर अपनी आंखों से भी उन रूपों को देखा। स्वच्छन्दतावाद और पाश्चात्य साहित्य के रोमांटिसिज़्म की समानता की और यद्यपि अनायास ही ध्यान आकृष्ट हो जाता है, किंतु इन दोनों में बुनियादी अंतर है। अंग्रेजी के स्वच्छन्दतावाद से पहले काव्य पर कई शताब्दियों तक कठोर अनुशासन रहा था। इस अनुशासन का रूप धार्मिक भी था (जैसे अंधकार युग में) और नैतिक तथा काव्यशास्त्रीय भी था (नव्यशास्त्रवादी युग)। छायावादी काव्य से पूर्व द्विवेदी - युग में नैतिक दृष्टि की प्रधानता मिलती है। छायावाद में उसका विरोध भी दिखाई देता है। वहीं द्विवेदी - युग से थोड़ा और पीछे जाने पर स्पष्ट हो जाता है कि छायावादी काव्य स्वच्छन्दतावादी कम और पुनरुत्थानवादी अधिक था। काव्यशास्त्रीय मूल्यों की दृष्टि से भी छायावाद प्राचीन सिद्धान्तों विशेषकर रस-सिद्धांत के अनुरूप है। और जहां तक दार्शनिक सिद्धांतों का सम्बन्ध है। छायावादी काव्य सर्ववाद, कर्मवाद, वेदान्त, शैव दर्शन, अद्वैतवाद, भक्ति अदि पुराने सिद्धान्तों को ही व्यक्त करता दिखाई देता है ।

**स्वानुभूति** - छायावादी भावाबोध स्वानुभूति और सौंदर्यप्रधान कल्पना द्वारा ही निर्मित हुआ है। किंतु छायावादी काव्य की अनुभूति केवल मन के स्तर पर ही नहीं रुक जाती अपितु वह और भी गहरी उतरती हुई आत्मा के लोक में संचरण करने लगती है। इनकी भावभूमि गीतिकाव्य के ही उपयुक्त है, क्योंकि ये स्वानुभूति की प्रत्यक्ष विवृति करती है। सुख दुःख की भावावेशमयी अवस्था विशेषकर गिने चुने शब्दों में आशा, अज्ञात प्रिय के प्रति प्रणय निवेदन और साधना की विविध अनुभूतियों के स्तर पर मुखरीत हुई है। महादेवी ने अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय निवेदन किया है, किंतु उनका प्रणय दुःख प्रधान है। महादेवी का यह दुःखवाद निराशा या अकर्मण्यता का व्यंजक नहीं है, उनकी वेदना की तुलना प्रसाद के आंसू काव्य के अंत में दिखाई देने वाली करुणा की अनुभूति से की जा सकती है। महादेवी ने दुःख को केवल व्यक्तिगत जीवन के संदर्भ में स्वीकार किया है।

**अंतर्मुखी काव्य** - छायावाद की अंतर्मुखी अनुभूति प्रधान मूल चेतना ने सृष्टि के बाह्य और स्थूल पक्ष के चित्रण में नयी स्फूर्ति और आवेग का संचार किया। छायावादी कवि की दृष्टि अंतर्मुखी होती हुई पहले तो मन के स्तर पर संचरण करती दिखायी देती है, किंतु वहां भी उसका पूर्ण परितोष नहीं होता और वह आत्मा तक पहुंच जाती है। छायावादी चेतना की अंतर्मुखी दृष्टि में सृष्टि का निषेध नहीं है, वरन् अध्यात्मिकता के स्तर पर सृष्टि की साग्रह स्वीकृति के साथ वह कर्मवाद से जुड़ जाती है।

**नवीन अभिव्यंजना पद्धति** - छायावादी काव्य की अभिव्यंजना पद्धति भी नवीनता और ताजगी लिये हुए है। द्विवेदी कालीन खड़ीबोली और छायावादी खड़ीबोली में बहुत अन्तर है। भाषा का विकास समग्र काव्य चेतना के विकास का ही अंतरंग तत्व होता है। द्विवेदी युगीन काव्य बहिर्मुखी था, इसलिए उसकी भाषा में स्थूलता और वर्णनात्मकता अधिक थी। इसके विपरीत छायावादी काव्य में जीवन की सूक्ष्म निःभृत स्थितियों को आकार प्राप्त हुआ। छायावाद के अर्थ निर्धारण के संदर्भ में एक और विवाद भी समाने आया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे सीमित अर्थ में एक शैली विशेष माना, जिसमें लाक्षणिक मूर्तिमत्ता, प्रतीक विधान, विरोध चमत्कार, विशेषण विपर्यय, मानवीकरण, अन्योक्ति विधान आदि पर बल रहता है। छायावादी अभिव्यंजना निस्संदेह अर्थ गंभीरता के उस उत्कर्ष तक पहुंच जाती है। इसीलिए छायावादी अभिव्यंजना पद्धति विशिष्ट और सांकेतिक हो गयी है।

**छायावाद एवं प्रकृति चित्रण** - पंत काव्य में प्रकृति के मनोरम रूपों का मधुर और सरस चित्रण मिलता है। पर्वत प्रदेश में पावस आदि कविताओं में प्रकृति के मनोहर चित्र विद्यमान हैं। जिसमें कवि की जन्मभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य का वैभव दिखाई देता है। दूसरी ओर कवि पंत आदर्श प्रेमी रहे हैं। उनकी अनेक कविताओं में प्रकृति - प्रेम और अदर्शवादिता सम्बन्ध रूप में मुखरित है। यहां कवि ने प्रकृति से चांदनी की आभा को पा कर जग के तिमिर त्रास को दूर करने की आकांक्षा व्यक्त की है। प्रकृति प्रेम एक तरह से ठोस यथार्थ जीवन के प्रति असक्ति की सीमा बन जाता है। परिवर्तन, एक तारा, नौका विहार आदि कविताओं में जिस दार्शनिक सत्य को वाणी दी गयी है उसका आधार और साधन भी प्रकृति है। परिवर्तन में प्रकृति के कठोर रूप का चित्रण हुआ अवश्य है किंतु कविता के अंत तक आते आते कवि उस भयानकता को भी मूलभूत आनंदमय सत्य के साथ जोड़ करके देखने लगता है, और इस प्रकार फिर अपनी परिचित भूमि पर सौंदर्य, आनंद और माधुर्य की भूमि पर लौट जाता है।

**प्रणय की अनुभूति और अभिव्यक्ति** - छायावादी कवियों ने प्रधान रूप से प्रणय की अनुभूति को व्यक्त किया है। उनकी कविताओं में प्रणय से जुड़ी विविध मानसिक अवस्थाओं

जैसे - आशा, आकुलता, आवेग, तल्लीनता, निराशा, पीड़ा, अतृप्ति, स्मृति, विषाद आदि का अभिनव एवं मर्मिक चित्रण मिलता है। छायावादी कवियों की अनुभूति की अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष है। यहाँ कवि और पाठक की चेतना के बीच अनुभूति के आतिरिक्त कोई अन्य स्थिती नहीं है। छायावादी कवियों की प्रणयनुभूति की अभिव्यक्ति भी इसी लोक सामान्य स्तर पर हुई है। छायावादी काव्य अनुभूति के स्तर पर मानव मात्र की स्थापना करने में समर्थ हुआ है। यह दूसरी बात है कि कल्पना के माध्यम से निजी अनुभूति का इस भाँति संस्कार कर लिया गया है कि वह मानव मात्र के हृदय को तल्लीन करने में समर्थ हो सके। छायावादी कव्य में अनुभूति कि इस प्रधानता के कारण ही उसे स्थूल के प्रती सूक्ष्म का विद्रोह माना गया है।

**आध्यात्म एवं दर्शन** - छायावादी कविता अपनी आरंभिक अवस्था में व्यक्तिनिष्ठ, अनुभूतिप्रवण और सौंदर्यमयी रही है। किन्तु बाद में जब कवियों की दृष्टि जीवन के अन्य प्रसंगों की ओर गयी तो कवि व्यक्तिनिष्ठ परिधि से बाहर निकल आये। छायावादी काव्य की अनुभूति केवल मन के स्तर पर ही नहीं रुक जाती अपितु वह और भी गहरी उतरती हुई आत्मा के लोक में संचरण करने लगती है। पंत की काव्य दृष्टि सृष्टि में व्याप्त मूल अक्षर सत्य का उदघाटन करती है, और महादेवी निराकार सर्वव्यापक प्रेम की भावना को ही काव्य का प्राण मानती हैं। प्रसाद की अनुभूति शैव दर्शन में परिणत होती चली जाती है, निराला भक्ति के क्षेत्र में साधना करते दिखायी देते हैं। इस प्रकार छायावादी चेतना की अंतर्मुखी दृष्टि में सृष्टि का निषेध नहीं है, वरन अध्यत्मिकता के स्तर पर सृष्टि की समग्र स्वीकृति के साथ वह कर्मवाद से जुड़ जाता है। अधुनिक युग के पुनर्जागरण के आंदोलन ने आध्यात्मिक सत्य का जो रूप स्वीकार किया था, वह छायावादी संवेदना का भी अंतरंग मूल्य बन गया है। अध्यत्मिकता के सत्य को स्वीकार करते हुए लौकिक यथार्थ के स्थूल व्यापक सत्य के स्वीकृति विचार की दृष्टि से छायावादी भावबोध की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।



शांति प्रिया दास, +3 द्वितीय वर्ष





## छायावादी कवि



जयशंकर प्रसाद



सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'



सुमित्रानंदन पंत



महादेवी वर्मा



## छायावादी प्रेम और मस्ती का काव्य

सन 1918 से 1938 तक के समय को छायावादी काल माना जाता है। इस काल के काव्य में छायावादी रचनाएं इतनी सशक्त हो चुकी थी कि इस काल का अनुकरण तथा तर्क वितर्क करते समय आलोचक का ध्यान केवल छायावादी काव्य धारा में ही कैद हो कर रह जाता है। इस का परिणाम यह हुआ कि इन काल के वे कवि जिनकी रचनाएं छायावाद की सीमा के बाहर थी, जैसे बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', बच्चन, नरेंद्र शर्मा 'अंचल', भगवती चरण वर्मा आदि की उदात्त भावना से प्रेरित कविताओं का अध्ययन इसी दृष्टि से उपेक्षित रह गया। यद्यपि प्रेम और यौवन की प्रखरता तथा आवेश को व्यक्त करने वाली इनकी अधिकांश कृतियां छायावाद युग में ही प्रकाश में आईं। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने राष्ट्रीय - सांस्कृतिक काव्य की रचना की है, किन्तु उनकी प्रणय संबंधी रचनाएं भी महत्वपूर्ण हैं। यह कहा जा सकता है कि प्रणय और यौवन का चित्रण तो छायावादी काव्य में बड़ी तल्लीनता के साथ किया गया है। इसलिए इन कवियों को स्वतंत्र रूप से प्रेम और मस्ती की काव्यधार के अंतर्गत रखने का क्या आधार है? उत्तर स्पष्ट है कि, छायावादी कवियों में प्रणय का महत्व सीमित है। प्रसाद, निराला और पंत की रचनाओं में रति के मांसल और आवेशमय रूप के विविध पक्षों की अभिव्यक्ति मिलती तो है, किन्तु धीरे धीरे इन कवियों ने स्थूल प्रणय - बंधन से ऊपर उठने का प्रयास करते हुए उसे एक व्यापक जीवन - चेतना के अंग रूप में अर्थात् जीवन के सर्वतोमुखी विकास के सोपान के रूप में ग्रहण किया है। इस दृष्टि से प्रसाद का 'आंसू' काव्य छायावादी प्रणय भावना के दोनों रूपों को मांसल-वासनात्मक रूप को और उदात्त करुणा के रूप को व्यक्त करता है। 'कामायनी' में श्रद्धा, जो कामगोत्रजा है और प्रेम का संदेश सुनाने के लिए अवतरित हुई है, एक सीमा तक ही लौकिक प्रणय का आलम्बन रहती है और अंत में उसीकी रागात्मिका वृत्ति का संबल पा कर मनु आनंद लोक तक पहुंचता है। निराला के 'तुलसीदास' में भी प्रणय की इस सामान्य लौकिक रूप का निषेध कर रागबोध का एक उदात्त, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रतिष्ठा करने का प्रयास है। वे

भी प्रणय को साध्य न मानकर साधन के रूप में ही स्वीकार करते हैं। महादेवी ने तो आरम्भ से ही प्रणय को आध्यात्मिक स्तर पर ग्रहण करने का प्रयास किया है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है यद्यपि छायावादी चेतना भी प्रधान रूप से व्यक्तिवादी चेतना है और मस्ती के इन कवियों की साधना भी व्यक्तिनिष्ठ रही है, छायावादी व्यक्ति चेतना शरीर से ऊपर उठकर मन और फिर आत्मा का स्पर्श करने लगी, जबकि इन कवियों में व्यक्तिनिष्ठ चेतना प्रधान रूप से शरीर और मन के धाराताल पर ही वक्त होती रही है। उन्होंने प्रणय को ही साध्य के रूप में स्वीकार करने का प्रयास किया है। छायावादी काव्य जहां प्रणय को जीवन की यथार्थ विषम व्यपकता में संजोने का प्रयास करता है, वहीं प्रेम और मस्ती का यह काव्य या तो यथार्थ से विमुख हो कर प्रणय में तल्लीन दिखाई देता है या फिर जीवन की व्यापकता को प्रणय की सीमाओं में ही खींच लेता है। 'नवीन' जी की 'साकी' शीर्षक कविता की ये पंक्तियां :-

हो जाने दे गर्क नशे में, मत पड़ने दे फर्क नशे में  
ज्ञान ध्यान पूजा पोथी के फट जाने दे वर्क नशे में  
ऐसी पिला के विश्व हो उठे एक बार तो मतवाला  
साकी अब कैसा विलंब भर - भर ला तन्मयता हाला।

प्रेम और मस्ती के इस काव्य में जीवन के विषय में किसी व्यापक परिकल्पना या सिद्धान्त का अभाव मिलता है। इसकी विशेषता तो मात्र प्रणय में तल्लीन हो जाने की कामना में है। यही इसका साध्य प्रतीत होता है,

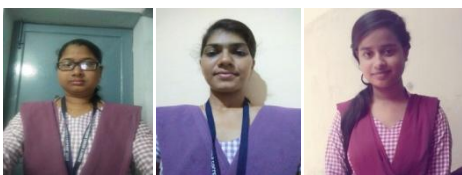
"वो मादकता ही क्या जिसमें बाकी रह जाये जग का भय!" (बच्चन)

इस दृष्टि से देखने पर यह कहा जा सकता है कि प्रणय का यह रूप छायावादी उदात्त प्रेम भावना और अर्वाचीन नई कविता की यौन भावना के बीच की कड़ी हैं। यद्यपि प्रणय के ये कवि शारीरिक प्रेम के महत्व को स्वीकार करते हुए कहीं कहीं जीवन की नैतिक मर्यादा का अतिक्रमण कर गये हैं, किंतु मुक्त निर्बाध भोग के समर्थक या प्रचारक ये नहीं हैं। दरअसल यह कविता भी उसी युग की उपज हैं, जिसने छायावाद को जन्म दिया। छायावादी कवियों ने भी नैतिकता के बोझ से आक्रांत प्रणय को मुक्त करने का प्रयास किया, किन्तु वे उसे पूरी तरह मुक्त कर न सके और उनकी प्रणय - भावना आध्यात्मिकता से संपृक्त हो गई। प्रणय के इन कवियों ने द्विवेदी युगीन नैतिकता के कठोर बंधन के प्रति विद्रोह किया। लौकिक स्तर पर प्रणय की तीव्रता की स्वीकृति का एक परिणाम यह हुआ कि प्रणय के साथ साथ कविता में मादकता, शराब, साकी, मैखाना आदि का भरपूर वर्णन होने लगा। यह प्रवृत्ति बच्चन की "मधुशाला" आदि कृतियों में पूरी शक्ति के साथ दिखाई देती हैं। प्रणय ओर मदिरा का यह नशा, साकी और मैखाने का यह वर्णन



व्यक्ति - स्वतंत्र की भावना की अभिव्यक्ति है। कवि न तो संसार से डरता है और न ही कोई लोकोत्तर आध्यात्मिक शक्ति उसे आंतरिक करने में समर्थ है। इस प्रकार इन कवियों में व्यक्तिनिष्ठ यथार्थ की अधिक सशक्त अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

यहाँ यह जिज्ञासा हो सकती है कि स्वाधीनता - आंदोलन के मध्य यह काव्यधारा किस प्रकार अपने आप को राष्ट्रीय यथार्थ से विमुख रख सकी? पहली बात यह है कि नवीन जैसे कवियों में राष्ट्रीय भावना भी पूरी प्रखरता के साथ दिखाई देती है। वे देश के व्यापक जीवन से जुड़े हुए हैं, और स्वतंत्रता के गीत ही नहीं गाते, वरन् उसकी प्राप्ति के लिए साधना भी करते हैं। किंतु नवीन का 'व्यक्ति' जब प्रबल हो उठता है तो वे प्रणय की धारा में मुक्त हो कर बहने के लिए आकुल हो उठते हैं। दूसरी और भगवति चरण वर्मा, बच्चन, नरेंद्र शर्मा, अँचल आदि कवि भी हैं। पहले तो यह कि विवेच्य काल में लिखित इनकी कविताएं इनके कवि - जीवन की आरंभिक रचनाएँ हैं, और इसलिए उनमें प्रणय की वैसी ही आवेशमय अभिव्यक्ति हुई है जैसी आरम्भिक छायावादी काव्य - आँसु, पल्लव, अनामिका आदि में मिलती है। प्रस्तुत काल की समाप्ति के बाद भी ये कवि रचना करते रहे और बच्चन, नरेंद्र शर्मा आदि में कुछ नए प्रमुखता भी भरकर सामने आई। दूसरी बात यह है कि जैसे जैसे स्वाधीनता आंदोलन बल पकड़ता जा रहा था वैसे वैसे ब्रिटिश साम्राज्य का दमनचक्र और उसका आतंक बढ़ता जा रहा था। इसलिए जो कवि खुल कर दमनचक्र और आतंक का सामना नहीं कर सके, वे आत्मकेंद्रित हो कर प्रणय के गीत गाने लगे। एक बात और भी है- काव्य अपनी अन्तरंग शक्ति से भी नए स्तरों और सोपानों की ओर बढ़ता है। द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मक भाषा के बाद छायावादी अभिव्यंजना के चमत्कार का उदय और उसके बाद जनभाषा से निकटता रखने वाली प्रणय - काव्य की यहा भाषा निश्चित ही काव्य भाषा खड़ीबोली की विकास की सूचक है। इसके मूल में कविता के संबंध में बदलते हुए दृष्टिकोण को भी लक्षित किया जा सकता है। यद्यपि यह काव्य छायावादी चेतना की छांव में ही उदित और पल्लवित हुआ, किन्तु छायावादी अभिव्यंजना पद्धति की सूक्ष्म सांकेतिक तथा लोकोत्तर स्तर की अनुभूति की दुरूहता इन कवियों के लिए एक वस्तुगत सत्य था। ज्ञात या अज्ञात रूप से ये कवि आरम्भ से ही छायावादी काव्य की सीमाओं के प्रति सजग रहे होंगे। प्रेम और मस्ती का यह काव्य निसंदेह अपनी सीधी सच्ची अनुभूति और कला के कारण जानता में विशेष ख्याति पा सका। किन्तु एक ही धरातल पर संचरण के कारण यह काव्य एकांगी और सीमित हो कर रहा गया जिस प्रकार छायावादी कवियों ने अपने प्रणय और अपनी व्यथा से ऊपर उठने का प्रयास किया, वैसा प्रयास इन कवियों में कम दिखाई देता है।



कविता, निहारिका, शताब्दी, +3 प्रथम वर्ष

## छायावादी प्रेम और मस्ती के कवि



बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'



पंडित नरेंद्र शर्मा 'अंचल'



हरिवंशराय बच्चन



भगवती चरण वर्मा



## छायावादी काव्य में प्रकृति चित्रण

छायावादी काव्य में प्रकृति चित्रण से पहले हमें उसके पूर्व काल में प्रकृति चित्रण के बारे में बात कर लेनी चाहिए। आधुनिक युग में छायावाद से पहले हमें दो काल मिलते हैं एक भारतेन्दु काल और दूसरा द्विवेदी काल।

भारतेन्दु काल में जहाँ भारतेन्दु कृत “बसंत होली”, व्यास की - “पावस पचासा”, गोबिंद गिल्ला भाई की “पावस पयोनिधि” आदि कृतियाँ में बसंत और वर्षा काल का आलंबनात्मक चित्रण हुआ है। वहीं दूसरी ओर भारतेन्दु जी के सत्यहरिश्चन्द्र नाटक में गंगा वर्णन, चन्द्रावली में यमुना वर्णन में अलंकार भाव से स्वतंत्र अनुभूति दब सी गई है। प्रकृति का वर्णन श्रुंगारिकता, सामाजिक उदबोधन, नीति कथन आदि से सम्बद्ध करने से प्रकृति का चित्रण इतना रुचिकर नहीं हुआ है। केवल इतना ही नहीं जगनमोहन सिंह की कविताओं में प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण और नैसर्गिक दृश्यों को स्वाभाविक चित्रण में उनका मन रमा है। इस युग के कवियों ने रीतिकाल के उद्दीपनात्मक प्रकृति चित्रों को आदर्श न मानकर उन्होंने संस्कृत काव्य में उपलब्ध होने वाले सूक्ष्म नैसर्गिक सौन्दर्य से प्रेरणा ली है।

वैसे ही अगर हम द्विवेदी युग की बात करें तो इस युग की प्रधान विशेषता राष्ट्रीयता ही रही है। आचार्य द्विवेदी ने स्वतंत्र विषयों पर कविता लिखने का परामर्श दिया फलतः इस युग में कहीं भी प्रकृति का चित्रण देखने को नहीं मिलता ।



छायावादी काव्य की चेतना व्यक्तिनिष्ठ और सूक्ष्म होते हुए भी मूर्त उपकरणों द्वारा व्यंजित की गई है। छायावाद का समय 1918 से 1938 तक माना जाता है, जिस समय भारत में स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था। इसी कारण इस युग के कवियों में स्वतंत्रता आंदोलन पर काव्य रचना करना अनिवार्य था। और बहुत से कवियों ने इस पर काव्य रचना भी की है। लेकिन केवल स्वतंत्रता पर ही नहीं बल्कि अन्य विषयों पर भी इस युग में कविताओं की रचना हुई है। उसमें प्रमुख प्रकृति चित्रण भी है। इस युग के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, और सुमित्रानंदन पंत हैं।

छायावाद के पूर्व युगों में जहाँ नारी के शारीरिक सौन्दर्य के अनेक मोहक चित्र प्रणय की कविताओं में बिखरे हुए मिलते थे। वहीं छायावाद में नारी के सौन्दर्य को प्रकृति के साथ तोल कर कवितायें लिखी गई हैं। जैसे प्रसाद जी की “आंसू” तथा “कामायनी”, पंत कृत “भावी पत्नी के प्रति” में व्यक्त नायिका का सौंदर्य और परोक्ष तथा सांकेतिक रूप में भी लक्षित होता है, जैसे निराला की जूही की कली आदि। इन कवियों की सौंदर्य भावना ने प्रकृति के विविध दृश्यों को अनेक कोमल कठोर रूपों में साकार किया है। प्रथम पक्ष के अंतर्गत प्रसाद की “बीती विभावरी जाग री”, निराला की “संध्या सुंदरी” पंत की “नौका विहार” आदि कविताओं का उल्लेख किया जा सकता है। जब कि बादल राग, कविता तथा पंत की परिवर्तन जैसी रचनाओं में प्रकृति के कठोर रूपों का चित्रण भी मिलता है। छायावादी काव्य में अनुभूति और सौन्दर्य के स्तर पर प्रायः मानव और प्रकृति के भावों और रूपों का तादात्म्य दिखाई देता है।

छायावाद युग में प्रकृतिचित्रण की अगर हम बात करें तो सबसे पहला नाम सुमित्रानंदन पंत जी का आता है। पंत जी की काव्य रचनाओं में प्रकृति के कुछ ऐसे रंग देखने को मिलते हैं जो शायद ही किसी और कविता में मिले। प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम और कल्पना की ऊंची उड़ान पंत के काव्य की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है।

कविवर पंत जी का जन्म 1900ई. में उत्तरांचल के जिला अल्मोड़ा के कौसानी ग्राम में हुआ था। जन्म के कुछ घंटे बाद ही मातृस्नेह से वंचित हो जाने के कारण अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा ने इन्हें बचपन से ही अपनी ओर आकृष्ट किया और प्रकृति के उस मनोरम वतावरण का इनके व्यक्तित्व पर गंभीर प्रभाव पड़ा और इनकी काव्य प्रेरणा का प्रमुख स्रोत बन गया। यह प्राकृतिक परिवेश किसी अन्य छायावादी कवि को नहीं मिला था। इसका उल्लेख करते हुए पंत ने लिखा है, “कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को जाता है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है, मैं घंटों एकांत में

बैठा हुआ प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था।....प्रकृति के साहचर्य ने जहां एक ओर मुझे सौंदर्य, स्वप्न और कल्पनाजीवी बनाया, वहां दूसरी ओर जनभीरू भी बना दिया"

पंत का यह सहचार्यजन्य प्रकृति प्रेम उनकी प्रथम रचना "वीणा" से लेकर "लोकायतन" नामक महाकाव्य तक में समान रूप से देखा जा सकता है। अपने कवि जीवन के आरंभिक दौर में पंत प्राकृतिक सौंदर्य से इतने अभीभूत थे कि नारी सौंदर्य के आकर्षण को भी उसके सम्मुख न्यून मान लिया था :

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया  
तोड़ प्रकृति से भी माया,  
बाले, तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन।

पंत के यहां प्रकृति निर्जीव जडवस्तु ना होकर एक साकार ओर सजीव सत्ता के रूप में उपस्थित हुई है। उसका एक एक अणु , प्रत्येक उपकरण कवि मन में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। संध्या, प्रातः, बादल, वर्षा, वसंत, नदी, निर्झर, भ्रमर, फूल, तितली, पक्षि, आदि सभी उसके मन को आंदोलित करते हैं। यहां संध्या का एक जिज्ञासापूर्ण चित्र दर्शनीय है:

कौन तुम रूपसि कौन?  
व्योम से उतर रही चुपचाप  
छिपी निज छाया में छवि आप,  
सुनहला फैला केश कलाप  
मधुर, मंथर, मृदु, मौन!

इस पूरी कविता में संध्या को एक आकर्षक युवती के रूप में मौन, मंथर गति से पृथ्वी पर पदार्पण करते हुए दिखा कर कवि ने संध्या का मानवीकरण किया है। प्रकृति का यह मानवीकरण छायावादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। इसी आधार पर पंत जी ने और भी बहुत सी काव्य की रचना की है, जिसमें प्रकृति के दुर्लभ मनोरम चित्र प्रस्तुत हुए हैं। पंत के बहुत सी प्रकृति संबंधी कविताओं में उनकी जिज्ञासा भावना के साथ ही रहस्य भावना भी व्यक्त हुई है। "प्रथम रश्मि" "मौन निमंत्रण" जैसी बहुत सी कविताएँ तो मात्र जिज्ञासा भाव ही व्यक्त करती हैं। इसके लिए प्रथम रश्मि का एक उदाहरण लेते हैं:

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!  
तूने कैसे पहचाना?  
कहाँ कहाँ है बाल विहंगिनी!  
पाया तूने यह गाना।

पंत की प्रकृति से सम्बद्ध ऐसी बहुत सी कविताएँ हैं, जिनमें इनके गहन एवं सूक्ष्म निरीक्षण के साथ ही इनकी आध्यात्मिक मान्यताएँ भी व्यक्त हुई हैं। इस दृष्टि से नौका विहार, एक तारा आदि कविताएँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

गंगा के चल जल में निर्मल,  
कुम्हलाई किरणों का रक्तोत्पल, है मृदु दल।  
लहरों पर स्वर्ण रेखा सुंदर पड़ गयी नील,  
ज्यों अधरों पर, अरुणाई प्रखर शिशिर से डर।

यहां गंगा के चंचल जल में लाल कमल के समान सूर्य के बिम्ब का डूबना और गंगा की लहरों पर संध्या की सुनहली आभा का धीरे धीरे नीलिमा में परिवर्तित होना आदि कवि की सूक्ष्म प्रकृति निरीक्षण और उसकी गहन रंग चेतना का परिचय है।

पंत में यथार्थ के विषम और दारुण रूप के अभाव का कारण भी कुछ हद तक प्रकृति के उस प्रभाव को माना जा सकता है। इनके मन में प्रकृति के प्रति इतना मोह पैदा हो गया था कि ये जीवन की नैसर्गिक व्यापकता और अनेकरूपता में पूर्ण रूप से आसक्त न हो सके।



पिंकी सिंह, +3 द्वितीय वर्ष





## छायावाद एवं रहस्यवाद

द्विवेदी युग के अंत में हिंदी कविता में एक ओर छायावाद का विकास हुआ वहीं दूसरी ओर रहस्यवाद और हालावाद का आरंभ हुआ। वस्तुतः रहस्यवाद, बल्कि कहना चाहिए आधुनिक रहस्यवाद, छायावादी काव्य-चेतना का ही विकास है। प्रकृति के माध्यम से मात्र सौंदर्यबोध तक सीमित रहने वाली और साथ ही प्रकृति के माध्यम से प्रत्याक्ष जीवन का चित्रण करने वाली धारा छायावाद कहलाई। पर जहां प्रकृति के प्रति रहस्यमयता का भाव भी जाग्रत हो गया वहाँ यह रहस्यवाद में परिवर्तन हो गया। जहाँ वैयक्तिकता का भाव प्रबल हो गया, वहाँ यह धारा हालावाद के रूप में अलग हो गई।

छायावाद और रहस्यवाद का मुख्य अंतर यह है कि छायावाद में प्रकृति पर बाह्य जीवन का आरोप है और यह प्राकृति प्रेम तक ही सीमित है। किन्तु रहस्यवाद में प्रकृति के माध्यम से उस अज्ञात-अंतर शक्ति के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयत्न होता है, जो सहज ही प्राप्य नहीं है। इस तथ्य को दूसरे शब्दों में यो भी कह सकते हैं कि "छायावाद" में प्रकृति अथवा परमात्मा के प्रति कुतूहल रहता है, पर जब यह कुतूहल आसक्ति का रूप धारण कर लेता है, तब वहाँ से रहस्यवाद की सीमा प्रारंभ हो जाती है।

आत्म-परमात्मा के संबंध में चर्चा दर्शनशास्त्र का विषय है। किंतु दर्शन में विचार के चिंतन की प्रधानता रहती है। रहस्यवाद भावना की वस्तु है, काव्य का विषय है। इसी सत्य की ओर संकेत करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने कहा था कि "साधना के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है" वही साहित्य के क्षेत्र में रहस्यवाद है।



छायावाद युग में महादेवी वर्मा की भूमिका महत्वपूर्ण है। महादेवी वर्मा जी के साहित्य में रहस्य भावना परिलक्षित होती है, अतः उनके काव्य में आत्मा-परमात्मा के मिलन, विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे हैं। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें निराशावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है। महादेवी वर्मा एवं रहस्य भावना एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। पहले रहस्य भावना को समझने का प्रयास करते हैं-

परिभाषा:-

1-रामचंद्र शुक्ल:- चिंतन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।

2- नंद दुलारे वाजपेयी :- व्यष्टि - सौन्दर्य दृष्टि छायावाद है और समष्टि - सौंदर्य दृष्टि रहस्यवाद ।

3- जयशंकर प्रसाद:- काव्य में आत्मा की मूल अनुभूति की मुख्य धारा रहस्यवाद है।

इस आलोक में हम महादेवी वर्मा की कविताओं में रहस्यानुभूति का आकलन करें तो भी यही प्रमाणित होता है कि वह सर्वत्र व्याप्त सृष्टि और प्रत्येक उपदान तथा प्रकृति व्यापार में एक विराट सत्ता के दर्शन करती है। वह उसके साथ तादात्म्य एवं साक्षात्कार को व्याकुल दिखाई देती हैं। यहीं से उनके काव्य में रहस्य की सृष्टि होती है। वह स्वयं को प्रकृति मान कर दिव्य सत्ता से मिलन को तत्पर रहती है। महादेवी स्वयं कहती हैं- हमारे मूर्त और अमूर्त जगत एक दूसरे से इस प्रकार मिले हुए हैं कि यथार्थदर्शी एक दूसरे को रहस्यदृष्टि से ही पूर्णता को प्राप्त करते हैं।

महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति पर यदि हम सतर्क दृष्टिपात करें तो हम पाएंगे कि उनकी कविताओं में जिस रहस्य भावना की अभिव्यंजना हुई है, उनमें कौतुहल और जिज्ञासा का सबसे पहला चरण होता है। मानव किसी चकित शिशु - सा जब ब्रह्मांड के विराट लीला व्यापार को देखना है, तो वह चकित हो कर रह जाता और जब उसकी बुद्धि कोई भी व्याख्या प्रस्तुत नहीं कर पाती तो वह रहस्य में डूब जाता है।

इस प्रकार महादेवी वर्मा में रहस्यानुभूति के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। मिलन की इच्छा, स्मरण, स्वप्न, और साक्षात् मिलन के बाद विरह का अनिवार्य चरण भी आता है। महादेवी की कविता में विरह के उदाहरण की तो कमी नहीं है, बल्कि समूचा काव्य ही विरह के रंग में रंग हुआ है। उनके समीप तो संपूर्ण जीवन ही विरह का जलजात है।

जब हम छायावादी रहस्यवाद की बात करते हैं, तो हम उसकी युगीन विशेषताओं को अनदेखा नहीं कर सकते। विभिन्न स्तरों पर पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े समाज के लिए यह मोटे तौर पर मुक्ति संघर्ष का युग था। जन - मानस मुक्ति की उड़ान के लिए पर खोलने को तत्पर था। दो विश्व युद्ध के मध्यान्तर का यह काल राष्ट्रीय चेतना के उत्कर्ष का काल था। महाप्राण निराला "परिमल" की भूमिका में लिखते हैं- "इस समय के और पराधीन काल के काव्यानुशासनों को देखकर हम जाति की मानसिक स्थिति को भी देख सकते हैं।" छायावादी कवियों ने इस पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष की अपनी रचनाओं को स्वर दिया, क्योंकि पराधीनता मानसिक क्लेश को जन्म देती है और यही संघर्ष मुक्ति के संघर्ष के रूप में व्यक्त हुआ है।

छायावादी युग महात्मा गांधी की सक्रियता, किसान आंदोलन, प्रथम विश्व युद्धतर स्थितियों, विश्वव्यापी श्रमिक हड़तालों, अरविंद घोष, तिलक के वीद्रोही तेवर आदि का काल था। जहां मुक्ति की छटपटाहट ने छायावादी काव्य में आकार ग्रहण किया है। छायावाद ने प्रकृति के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण और तथाकथित नैतिक रूढ़ियों से मुक्ति का अलख जगाया। उसने रीतिकाल की सर्वथा भोगवादी प्रवृत्ति से मुक्ति चाही तो द्विवेदी युग की दुराग्रही भोग विरोधी मानसिकता से भी छुटकारा चाहा।

महादेवी वर्मा की रहस्यनुभूति की उपयुक्त विवेचना के उपसंहार में हमें यह स्पष्ट कर के चलना होगा कि महादेवी का और व्यापक स्तर पर छायावाद का यह रहस्यवाद, मध्ययुगीन वेद दर्शन को नए सिरे से व्याख्यायित करता है , और इस वेदांत की आभा को पश्चिम जगत की वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति की चकाचौंध भी मिटा नहीं पाई। इसीलिए छायावादी राष्ट्रीय जागरण में धार्मिक प्रतीक और तत्त्व महत्त्वपूर्ण भूमिका में दिखाई पड़ते हैं। यह आध्यात्मिक धारा मध्ययुगीन आदर्शवाद का पोषण करने वाली थी। यह वह काल था जब तिलक जैसे नेता गीता को कर्मयोग के रूप में ग्रहण कर रहे थे, अरविंद घोष जैसे आंदोलनकारी (1908 के बाद) रहस्य साधना की ओर मुड़ रहे थे और विवेकानंद जैसे आध्यात्मिक गुरु व्यवहारिक समस्याओं का व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करने के प्रयास में दर्शन का सहारा लेकर समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। उनका यह दृष्टिकोण छायावादियों के व्यक्तिवाद के विरुद्ध जाता है और उन्होंने अपनी रचनाओं में इसका वर्णन किया। महादेवी वर्मा स्वयं कहती हैं- "व्यापक चेतना से व्यक्तिगत चेतना की एकता की भावना ने पुरानी रहस्य प्रवृत्ति को नया रूप दिया है।"

महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति अथवा छायावादी रहस्य भावना मध्ययुगीन संतों के रहस्यवाद से किस प्रकार भिन्न थी? इसका अंतर यह है कि छायावादी रहस्यवाद मध्ययुगीन रहस्यवाद की तरह साम्प्रदायिक नहीं था।

इस तरह महादेवी छायावादी रहस्यवाद की प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। उनमें रहस्यानुभूति के प्रत्येक चरण की अभिव्यक्ति मिलती है। वह प्रकृति व्यापार में एक विराट सत्ता के दर्शन करती और उसके साथ रहस्यात्मक, रागात्मक संबंध स्थापित करने को आतुर रहती हैं। वह अपनी संवेदनाओं को शोषित-उपेक्षित वर्ग से जोड़कर चली। महत्वपूर्ण बात यह है कि महादेवी की रहस्यानुभूति मध्ययुगीन संतो के रहस्यवाद से भिन्न है। महादेवी का रहस्यवाद मध्ययुगीन रहस्यवाद की तरह सम्प्रदायिक नहीं था, और उसके पीछे किसी धार्मिक मतवाद की प्रेरणा भी नहीं थी। यह "सम्प्रदायिक साधनापरक रहस्यवाद" से अलग अनुभूति थी।



सोनाली सेठी, +3 द्वितीय वर्ष

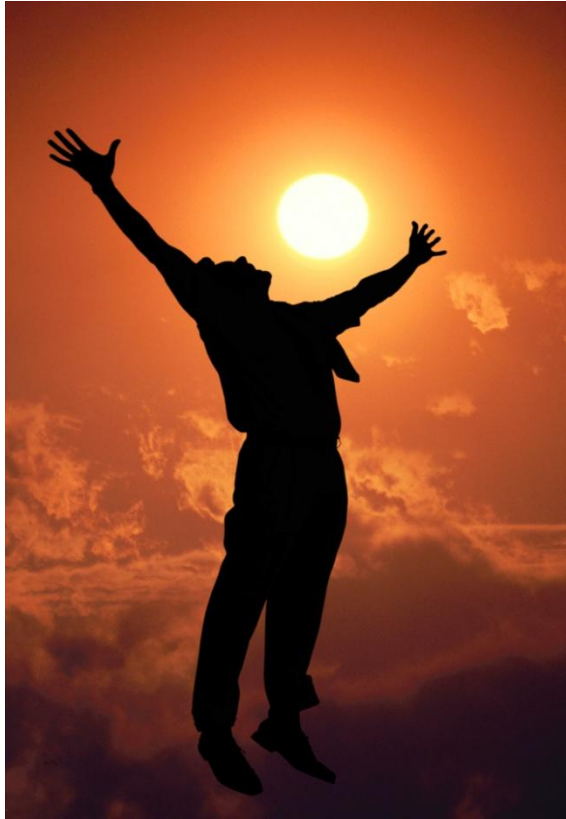
### जो तुम आ जाते एक बार

जो तुम आ जाते एक बार  
कितनी करुणा कितने सँदेश,  
पथ में बिछ जाते बन पराग,  
गाता प्राणों का तार-तार  
अनुराग-भरा उन्माद-राग;  
आँसू लेते वे पद पखार !  
जो तुम आ जाते एक बार !

हँस उठते पल में आर्द्र नयन  
घुल जाता ओठों से विषाद,  
छा जाता जीवन में वसंत  
लुट जाता चिर-संचित विराग;  
आँखें देतीं सर्वस्व वार ।  
जो तुम आ जाते एक बार !

- महादेवी वर्मा



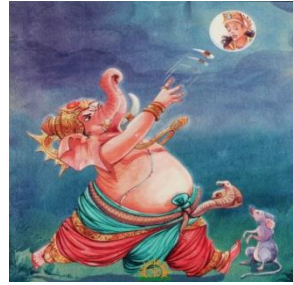


## सूरज

सूरज सकल शक्ति का आधार है। उसके आलोक से सारी धरती आलोकित रहती है। जब सुबह सूरज उदित होता है तब सृष्टिका जैसे प्ररम्भ होता है। सूरज का आना दिन की शुरुआत होता है, पर इसलिये नहीं कि भोजन का प्रबंध कर सके, बल्कि इसलिये कि जीवन की नई शुरुआत कर सके। अपने सपनों को पूरा कर सके। इसीलिये सूरज के आते ही लोग पहले सूरज को प्रणाम करते हैं और अपना दिन शुरू करते हैं ।



सांध्यरानी साहू, +3 द्वितीय वर्ष



## चाँद

चाँद रात में सबको आलोक देता है। ओर उसकी छाया सूरज की तरह गरम न होकर शीतल होती है। चाँद देखने में बहुत ही खूबसूरत है लेकिन उसमें भी दाग है। वो अपनी सुंदरता पर बहुत घमण्ड करता था। एक बार श्री गणेश जी अपने मूषक के साथ रात को रास्ते में जा रहे थे। तब वहीं रास्ते में एक साँप को देख कर वो डर गए ओर उसे चेतावनी दे कर भगा दिया। उस समस्त कार्य को चाँद देख रहा था। और गणेश जी को देखकर वो हंसने लगा। गणेश जी को इस बात का बुरा लगा और वे गुस्से में आकर चाँद को श्राप देते हैं कि "तुम मेरे चेहरे को देखकर हंस रहे थे मैं तुम्हें श्राप देता हूँ- कि तुम्हारी उज्ज्वलता चली जाए और तुम सदा सर्वदा के लिए काले अंधेरे की तरह बन जाओ "। चाँद ने अपने किये पर पश्चाताप करके माफी मांगी पर गणेश जी ने कहा कि मैं अपना अभिशाप वापस नहीं ले सकता, पर हाँ तुम महीने में एक दिन के लिए अंधेरा बन जाओगे जो कि अमावस की नाम से जाना जायेगा। अहंकार किसी अभिशाप से कम नहीं होता है।



प्रियंका साहू, +3 द्वितीय वर्ष





## गोपी और बिल्ली

कई दिनों की बात है। एक छोटी से गाँव में एक बूढ़ी माँ रहती थी। उसके साथ उसकी 6-7 साल की एक पोती भी थी। उसका नाम था गोपी। गोपी बचपन से अपने दादी के साथ रहती थी। क्योंकि उसके माँ-बाप बचपन में ही गुजर गए थे। गोपी की दुनिया में उसकी दादी के अलावा और कोई नहीं था। गोपी अपनी दादी को बहुत प्यार करती थी। उनके पास एक छोटी सी जमीन भी थी। उस जमीन में गोपी की दादी थोड़ी-बहुत खेती करती थी, इससे उनका गुजारा हो जाता था। इसी प्रकार दोनों प्राणी खुशी से रहते थे।

एक दिन गोपी अपनी दादी के साथ खेत में गयी। वे अपने आप ही आपस में खेल रही थी। फिर कहीं से एक आवाज उसे सुनाई दी। जहाँ से आवाज आ रही थी वहाँ जाकर देखी तो एक प्यारा सा बिल्ली का बच्चा था। गोपी उस बिल्ली के बच्चे को वहाँ से उठाकर दादी के पास ले आयी और दादी से बोली- 'दादी ये बच्चा कितना प्यारा दिखता है, इसे हम घर ले चले क्या?' दादी ने कहा- 'अच्छा ठीक है'। वेसे भी गोपी के साथ खेलने के लिए कोई भी नहीं था। गोपी उस बिल्ली के बच्चा को घर लेकर आयी और उसका नाम 'कमली' रखा।

गोपी खाते सोते समय हर वक्त कमली को अपने साथ ही रखती थी। जैसे जैसे कमली बड़ी होती जाती, उसके प्रति गोपी प्यार भी बढ़ने लगा। कमली के बिना गोपी का एक दिन भी गुजारा मुश्किल था। एक छोटी सी बच्ची का एक पशु के प्रति ऐसा प्रेम देखकर उसके दादी और उसके पड़ोसी आश्चर्यचकित हो जाते।

एक दिन कमली को एक दूसरी बिल्ली ने बहुत ही बुरी तरह से काट लिया। कमली बहुत जखमी हो गयी। कमली की यह हालत देखकर गोपी बहुत हैरान हो गयी। फिर गोपी उसे लेकर पशु वैद्य के पास गई। उन्होंने कहा कि- 'बिल्ली बहुत जखमी हो गयी है। इसे दवाओं से बचाना बहुत मुश्किल है'। यह बात सुनकर गोपी बहुत रोई और फिर कमली और दवाओं को लेकर घर आई। कमली ने खाना-पीना छोड़ दिया था। सिर्फ अपने बिस्तर पर लेटी रहती थी। दूध की एक बूंद भी अपने मुँह में नहीं लेती थी। उसकी तबीयत और ज्यादा खराब होने लगी। गोपी कमली को इस हाल में देखकर बहुत रोई। फिर गोपी ने भी खाना-पीना छोड़ दिया। सिर्फ भगवान के ऊपर उसकी आस्था थी कि भगवान कमली को जल्दी से ठीक कर देंगे। गोपी सुबह से लेकर शाम बस भगवान जी से कमली के लिए प्रार्थना करती रहती। फिर उसके ठीक ही अगले दिन कमली अपने बिस्तर से उठकर थोड़ी सा दूध पीने लगी। आ कर गोपी के पास बैठी। गोपी ने उसे देखकर खुशी से उसे अपने गोदी में बैठा लिया और उसको बहुत प्यार करने लगी। गोपी की

दादी और उसके पड़ोसी ये मनोरम दृश्य देखकर बहुत खुश हुए। अगर किसी भी वस्तु को अपने सच्चे मन से प्यार करो तो वह मिल ही जाती है। जैसे इस कहानी में कमली के प्रति गोपी के प्यार को देखा।

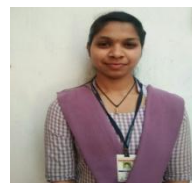


श्रद्धांजलि भउल, +3 प्रथम वर्ष



## महाशिवरात्रि

हिन्दू धर्म में महाशिवरात्रि एक महान पर्व के रूप में मनाया जाता है। जब देवी पार्वती ने महादेव को पाने के लिए व्रत किये थे। और महादेव ने प्रसन्न हो कर देवी पार्वती की कठोर तपस्या का फल दिया। फलस्वरूप उन्होंने महादेव को अपने पति के रूप में प्राप्त किया। इसी दिन महादेव ने समुद्र मंथन से निकले अलाहल का विश्व कल्याण हेतु पान किया था। इसी कारण इस पर्व को महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को लोग दिन भर निर्जला उपवास रहकर रात की दिप जलाकर उजागर रहकर महादेव की आराधना करते हैं, और महादीप को देख अपना व्रत तोड़ते हैं।



सोनिया नायक, +3 द्वितीय वर्ष





## अथाह

जो कुछ दिखता है वह थोड़ा है ।  
जो छिपा है वह कहीं अधिक है ।  
चाहे हो पृथ्वी या हो सागर  
और या हो आकाश  
सबसे-बहुत कुछ छिपा है ।  
हीरे-मोती या हो सोना-चांदी  
या हो अनेक अमूल्य रत्न  
इनके मूल्यों से बहुत कुछ छिपा है ।  
पुस्तकों, अभिलेख और पांडुलिपियों में  
महाकाव्य हो या अनेक ग्रंथ  
इन सब में बहुत ज्ञान छिपा है ।  
वैज्ञानिक, भूगोलशास्त्री और दार्शनिक  
या हो कवि, लेखक और ज्ञानी  
इन सबके मस्तिष्क में बहुत कुछ छिपा है ।  
देशों दिशाओं में है प्राणी  
पशु, वृक्ष और नर नारी  
सब दिशाओं में - बहुत कुछ छिपा है ।  
हम सब जीते हैं इस भ्रम में  
की हमने बहुत कुछ देखा है ।

परंतु वस्तुस्थिति कहती है ।  
जीवन में बहुत कुछ छिपा है ।



(संग्रह) प्रियंका परिडा, +3 II वर्ष

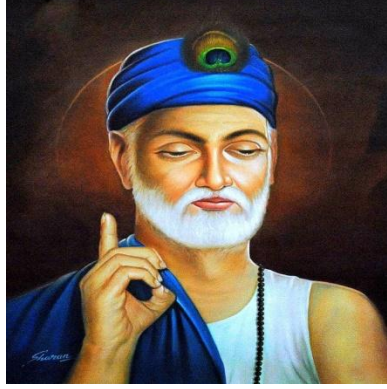


## मानवता

कोई सड़कें बनवा जाता है  
तो कोई अनाथालय बनवा जता है  
कोई पुल बनवा जाता है  
तो कोई स्कूल बनवा जाता है  
किंतु हे मुसाफिर  
तू जीवन की राह में  
प्यार और आस्था का रिश्ता बना  
कि कुछ बनवाये बिना भी सौहार्दता हेतु  
लोग तुझे सदा याद करें



शबाना, +3 द्वितीय वर्ष



## सुमिर करतार

एक बार कबीरदास जी हरि भजन करते हुए एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियाँ जा रही थी। उनमें से एक स्त्री की शादी कहीं तय हुई होगी तो उसके ससुराल वालों ने सगुन में एक नथनी भेजी थी। वह लड़की अपनी सहेलियों को बार-बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है वैसी है। ये खास उन्होंने मेरे लिए भेजी है। बार - बार बस नथनी की ही बात। उनके पीछे चल रहे कबीरदास जी के कान में सारी बातें पड़ रही थी। तेजी से कदम बढ़ाते कबीर उनके पास से निकले और कहा-

नथनी दिनी यार ने, तो चिंतन बारंबार ,  
नाक दिनी करतार ने, उनको दिया बिसार।

सोचो यदि नाक ही ना होती तो नथनी कहां पहनती! यही जीवन में हम भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है परंतु जिस परमात्मा ने यह दुर्लभ मनुष्य देह दी और इस देह से संबंधित सारी वस्तुएँ, सभी रिश्ते - नाते दिए, उसी को याद करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता है।



कादम्बिनी पण्डा, +3 द्वितीय वर्ष



## बचपन



एक बचपन का जमाना था,  
जिसमें खुशियों का खजाना था  
चाहत चाँद को पाने की थी,  
पर दिल तितली का दीवाना था...  
खबर ना थी कुछ सुबह की,  
ना शाम का ठिकाना था ,  
थक कर आना स्कूल से,  
पर खेलने भी जाना था...  
माँ की कहानी थी,  
परियों का फ़साना था ..  
बारिश में कागज की नाव की थी,  
हर मौसम सुहाना था,  
रौने की वजह ना थी ,  
ना हँसने का बहाना था...  
क्युं हो गये हम इतने बड़े,  
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था...  
वो बचपन का जमाना था...



शरीफा शरवरी, +3 प्रथम वर्ष

## मेहनत



जितना बड़ा सपना होगा  
उतनी बड़ी तकलीफें होगी  
और जितनी बड़ी  
तकलीफें होगी उतनी बड़ी  
कामयाबी होगी।

कर्म करो तो फल मिलता है,  
आज नहीं तो कल मिलता है।  
जितना गहरा अधिक हो कुँआ,  
उतना मीठा जल मिलता है ।  
जीवन के हर कठिन प्रश्न का,  
जीवन से ही हल मिलता है।



सोनाली राउत, +3 द्वितीय वर्ष

# ऊँट



अजय राजस्थान के किसी शहर में रहता था। वह ग्रेजुएट था और एक प्राइवेट कंपनी में जॉब करता था । पर वो अपनी ज़िन्दगी से खुश नहीं था । हर समय वो किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था और उसी के बारे में सोचता रहता था।

एक बार अजय के शहर से कुछ दूरी पर एक फ़कीर बाबा का काफिला रुका हुआ था । शहर में चारों ओर उन्हीं की चर्चा थी। बहुत से लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास पहुँचने लगे । अजय को भी इस बारे में पता चला और उसने भी फ़कीर बाबा के दर्शन करने का निश्चय किया।

छुट्टी के दिन सुबह - सुबह ही अजय उनके काफिले तक पहुँचा । वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ जुटी हुई थी । बहुत इंतज़ार के बाद अजय का नंबर आया। वह बाबा से बोला ,” बाबा , मैं अपने जीवन से बहुत दुःखी हूँ । हर समय समस्याएं मुझे घेरी रहती हैं । कभी ऑफिस की टेंशन रहती है, तो कभी घर पर अनबन हो जाती है । और कभी अपने सेहत को लेकर परेशान रहता हूँ .... बाबा कोई ऐसा उपाय बताइये कि मेरे जीवन से सभी समस्याएं ख़त्म हो जाएं और मैं चैन से जी सकूँ ?

बाबा मुस्कराये और बोले , “ पुत्र , आज बहुत देर हो गयी है। मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कल सुबह दूंगा ...लेकिन क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम करोगे ...?”

“ज़रूर करूँगा”, अजय उत्साह के साथ बोला ।

“देखो बेटा , हमारे काफिले में सौ ऊंट हैं , और इनकी देखभाल करने वाला आज बीमार पड़ गया है । मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम इनका खयाल रखो ...और जब सौ के सौ ऊंट बैठ जाएं तो तुम भी सो जाना ...”, ऐसा कहते हुए बाबा अपने तम्बू में चले गए ।

अगली सुबह बाबा अजय से मिले और पुछा , “ कहो बेटा , नींद अच्छी आई ?”

“कहाँ बाबा , मैं तो एक पल भी नहीं सो पाया , मैंने बहुत कोशिश की पर मैं सभी ऊंटों को नहीं बैठा पाया , कोई न कोई ऊंट खड़ा हो ही जाता ....!!!”, अजय दुःखी होते हुए बोला।”

“मैं जानता था यही होगा ...आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ है कि ये सारे ऊंट एक साथ बैठ जाएं ....!!!”, “ बाबा बोले।

अजय नाराज़गी के स्वर में बोला , “ तो फिर आपने मुझे ऐसा करने को क्यों कहा? ”

बाबा बोले , “ बेटा , कल रात तुमने क्या अनुभव किया , यही ना कि चाहे कितनी भी कोशिश कर लो सारे ऊंट एक साथ नहीं बैठ सकते ... तुम एक को बैठाओगे तो कहीं और कोई दूसरा खड़ा हो जाएगा इसी तरह तुम एक समस्या का समाधान करोगे तो किसी कारणवश दूसरी खड़ी हो जाएगी। पुत्र जब तक जीवन है ये समस्याएं तो बनी ही रहती हैं। कभी कम तो कभी ज्यादा।”

“तो हमें क्या करना चाहिए ?”, अजय ने जिज्ञासावश पुछा।

“इन समस्याओं के बावजूद जीवन का आनंद लेना सीखो। कल रात क्या हुआ , कई ऊंट रात होते -होते खुद ही बैठ गए , कई तुमने अपने प्रयास से बैठा दिए , पर बहुत से ऊंट तुम्हारे प्रयास के बाद भी नहीं बैठे। जब बाद में तुमने देखा तो पाया कि तुम्हारे जाने के बाद उनमें से कुछ खुद ही बैठ गए। कुछ समझे? समस्याएं भी ऐसी ही होती हैं। कुछ तो अपने आप ही खत्म हो जाती हैं। कुछ को तुम अपने प्रयास से हल कर लेते हो। और कुछ तुम्हारे बहुत कोशिश करने पर भी हल नहीं होतीं। ऐसी समस्याओं को समय पर छोड़ दो। उचित समय पर वे खुद ही खत्म हो जाती हैं।और जैसा कि मैंने पहले कहा ... जीवन है तो कुछ समस्याएं रहेंगी ही

रहेंगी। पर इसका ये मतलब नहीं की तुम दिन रात उन्ही के बारे में सोचते रहो ऐसा होता तो ऊंटों की देखभाल करने वाला कभी सो नहीं पाता। समस्याओं को एक तरफ रखो और जीवन का आनंद लो। चैन की नींद सो। जब उनका समय आएगा वो खुद ही हल हो जाएँगी। पुत्र, ईश्वर के दिए हुए आशीर्वाद के लिए उसे धन्यवाद करना सीखो पीड़ाएं खुद ही कम हो जाएंगी।” फकीर बाबा ने अपनी बात पूरी की।



सोनाली राउत, +3 द्वितीय वर्ष





## यादों के गलियारों से

आत्मरक्षा प्रशिक्षण



व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण



नृविज्ञान विभाग की संगोष्ठी, विषय - जनजातियों की भाषा



स्वच्छता सर्वेक्षण में विभाग की छात्रायें



धन्यवाद

